"किसान हैं अन्नदाता, यहीं हैं देश के भाग्यविधाता"

पंत प्रसार संदेश

वर्ष : 20, अंक : 2 (अप्रैल–जून, 2025)

कुलपति संदेश

देश में बढ़ती जनसंख्या को निरन्तर एवं बिना किसी अवरोध के खाद्यान्न उपलब्ध करवाना देश के कृषि वैज्ञानिकों के लिए सदैव महत्वपूर्ण चुनौती रही है। वर्ष दर वर्ष सिकुड़ती कृषि भूमि, पर्यावरण असंतुलन और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति, उद्देश्य प्राप्ति को और कठिन बनाती है। कृषि को लाभकारी बनाने हेतु कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "विकसित कृषि संकल्प अभियान" दिनांक 29 मई से 12 जून, 2025 तक चलाया गया। इस अभियान द्वारा 1.43 लाख गाँवों के 1.34 करोड़ किसानों के साथ वैज्ञानिकों और अधिकारियों द्वारा कृषि को लाभकारी बनाने हेतु ग्राम स्तर पर मंथन किया गया। मुझे विश्वास है कि यह अभियान कृषकों हेतु अत्यन्त लाभकारी रहा होगा।

साथियों, पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष में दो बार किसान मेला मार्च एवं अक्टूबर में आयोजित किया जाता रहा है। किसान मेले का प्रमुख आकर्षण "पंतनगर बीज" के साथ–साथ फल–सब्जी पौध, व अन्य कृषि निवेशों का क्रय होता है। गत अक्टूबर 2024 के किसान मेले में लगभग 27000 कृषकों की सहभागिता, 441 फर्मों के स्टॉल तथा रू. 1.20 करोड़ के विश्वविद्यालय के उन्नत बीजों का विक्रय हुआ तथा नवीनतम कृषि तकनीकों की जानकारी दी गई, जो इन मेलों की महत्ता को दर्शाता है। विश्वविद्यालय द्वारा आगामी अक्टूबर माह में पुनः किसान मेला आयोजित किया जा रहा है। इस मेले में गेहूँ, मसूर, चना, मटर व अन्य रबी फसलों के बीज आपके लिये उपलब्ध रहेंगे। मैं आह्वान करूँगा कि अधिक से अधिक किसान भाई एवं बहिनें इस मेले में भाग लें और विकसित तकनीकों को अपनाकर अपनी आर्थिकी सुदृढ़ करें और देश के विकास में सहभागी बनें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "पंत प्रसार संदेश" पत्रिका अंकः अप्रैल–जून, 2025 कृषि से जुड़े प्रसार कार्यकर्ताओं व कृषकों हेतु लाभकारी होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा व डा0 बी0डी0 सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं सभी सहयोगी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डा० मनमोहन सिंह चौहान)
कुलपति

संदेश

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषकगण कठिन व प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन–यापन करने के लिए जाने जाते हैं। कृषि उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि हेतु कुछ समस्याएं यथा पथरीली व कम उपजाऊ मृदा, ढालू व सीढ़ीनुमा खेत, सीमित सिंचाई के साधन, तकनीकों का अभाव के साथ–साथ जनसंख्या वृद्धि, पलायन, पारिस्थितिकी असंतुलन इत्यादि हैं। इन समस्याओं के यथोचित निराकरण पर ही पर्वतीय कृषि का भविष्य आधारित है। इन क्षेत्रों की पारिस्थितिकी संतुलन को भी दृष्टिगत रखते हुए काश्तकारों के आर्थिकी में सुधार के साथ निरन्तर हो रहे पलायन को रोकने की नितान्त आवश्यकता है। इसके लिए यथाशीघ्र उन्नत कृषि तकनीक की कार्य योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारने की आवश्यकता प्रतीत होती है। अपनी समृद्ध गरिमा संजोये पंतनगर विश्वविद्यालय तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्र कृषकों के उत्थान हेतु सतत् प्रयत्नशील है। यहाँ के वैज्ञानिक, जनपद के सम्बन्धित अधिकारियों के साथ मिलकर दूरस्थ क्षेत्र के कृषक समुदाय के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर कार्य कर रहे हैं। मैं यहाँ अवश्य उल्लेख करना चाहूँगा कि गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर एवं बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा के वैज्ञानिकों के सहयोग से अनेक कृषि तकनीक विकसित की गयी, जो किसानों हेतु लाभकारी हैं। मैं कृषक समुदाय से अपील करूँगा कि वे पंतनगर विश्वविद्यालय की वेबसाईट अथवा उनके प्रसार निदेशालय से सीधे सम्पर्क कर अधिक से अधिक लाभ ले सकते हैं। कृषक के लिये उपयोगी त्रैमासिक पत्रिका "पंत प्रसार संदेश" एक ज्ञानवर्धक पत्रिका है। इसके प्रकाशन समिति के सभी सदस्य प्रशंसा के पात्र है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(डा0 एस0वी0एस0 राजू)
कुलपति, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

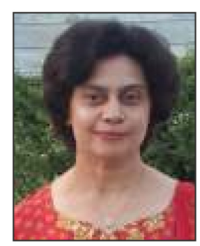

उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के दृष्टिगत राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, एन.जी.ओ. तथा कृषि आधारित रेखीय विभागों पर कृषि उत्पादकता में वृद्धि व सुदूर पर्वतीय अंचल में खेती के परम्परागत तरीके को विकसित तकनीक से जोड़ने का सामूहिक दायित्व है। यहाँ यह उल्लेखित करना समीचीन होगा कि उत्तराखण्ड में प्रचुर मात्रा में उत्पादित होने वाले मंडुवा, उगल, नौरंगी, गहत, भट्ट इत्यादि के वृहद् प्रचार–प्रसार से इन उत्पादों को बेहतर बाजार मिलेगा। जन समुदाय को रसायन मुक्त उत्पाद उपलब्ध कराने हेतु मा. प्रधानमंत्री जी ने "प्राकृतिक खेती" अपनाने पर बल दिया है, उस पर भी ध्यान केन्द्रित करते हुए इस नयी विधा को सरल और सुगम बनाने की आवश्यकता है। विकसित कृषि तकनीकों को दूरस्थ क्षेत्रों में अवस्थित कृषकों तक ले जाना चुनौतीपूर्ण होता है। इस कार्य को विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्र अपने–अपने क्षेत्र के अटारी के सहयोग से बखूबी निभा रहे हैं। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा भी अनेक कृषकोपयोगी कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इच्छुक कृषक हमसे जुड़ कर उन्नत कृषि कर अपने आजीविका में वृद्धि कर सकते हैं।

पंतनगर विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के उन्नयन हेतु विविध कार्यक्रम यथा्– मशरूम उत्पादन, मत्स्य पालन, औषधीय व सगन्ध पौधों की खेती, गुणवत्तायुक्त पौध उत्पादन व वितरण, जैविक कृषि इत्यादि का सफल संचालन कर रहे हैं। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखण्ड) द्वारा "पंत प्रसार संदेश" पत्रिका के अंक : अप्रैल–जून, 2025 का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(डा0 रेनू सिंह, आई.एफ.एस.)
कुलपति / निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय, देहरादून

आगामी त्रैमास के कृषि कार्य : जुलाई–सितम्बर

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : फसल की रोपाई इस माह में तथा सीधी बुवाई माह के प्रथम सप्ताह तक कर लें। उर्वरक एवं खरपतवारनाशी रसायनों का प्रयोग संस्तुति के अनुसार करें।

गन्ना : जलभराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें। फसलों को गिरने से बचाने के लिए जड़ों पर पर्याप्त मिट्टी चढ़ायें तथा बढ़वार अच्छी होने पर 05 फीट की ऊँचाई पर बँधाई कर लें। पाइरिला, चोटी बेधक अथवा तना बेधक कीट की रोकथाम के लिए संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायनों का प्रयोग करें।

मक्का : फसल में यथासमय निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें तथा दो फीट ऊँची होने पर यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।

सोयाबीन, उर्द, मूंग एवं अरहर : सोयाबीन की बुवाई माह के प्रथम सप्ताह में, उर्द व मूंग की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में पूरी कर लें। जून में बोयी गयी अरहर की फसल में विरलीकरण करें व निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें।

तिल एवं मूँगफली : तिल की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में तथा मूँगफली की बुवाई माह के मध्य तक कर लें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण करें। वर्षा के पश्चात् पर्याप्त नमी होने पर प्रति नाली 0.9 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। मंडुवा, झंगोरा एवं काकुन में झौंका रोग लगने पर संस्तुति के अनुसार जैव नियंत्रक अथवा फफूँदीनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अरहर, सोयाबीन, उर्द, मूंग, नौरंगी (राइसबीन), गहत एवं राजमा : सोयाबीन, अरहर, गहत, नौरंगी एवं राजमा में विरलीकरण करें तथा निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। उर्द एवं मूंग की बुवाई प्रथम सप्ताह तक कर लें।

धान : घाटी वाले क्षेत्रों में रोपाई माह के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर लें। चेतकी/जेठी धान में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें तथा वर्षा के पश्चात् उपयुक्त नमी होने पर 1.25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली की टॉप ड्रेसिंग करें। रोपित धान में खैरा अथवा झौंका रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर : बुवाई हेतु उन्नत संकर किस्मों का चुनाव करें। आखिरी जुताई के समय नत्रजन–फास्फोरस–पोटाश 160:80:80 कि.ग्रा./हैक्टेयर का छिड़काव करें। फफूँदी जनित रोग नियंत्रण हेतु जैव नियंत्रक– ट्राइकोडर्मा एवं स्यूडोमोनास 10 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन : अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिये पौध रोपण का कार्य माह के प्रथम पखवाड़े में 60x60 सेमी. की दूरी पर करें। रोपण सायंकाल में करें तथा उसके बाद हल्की सिंचाई करें।

मिर्च : फलों की तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। आगामी फसल के लिए इस माह में पौध की रोपाई 60x45 सेमी. की दूरी पर करें।

फूलगोभी : अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत का चुनाव करें। खेत की अच्छी तरह तैयारी कर 50x30 सेमी. की दूरी पर पौधों की रोपाई करें।

मूली : अगेती फसल प्राप्त करने के लिए ऊँचे स्थान पर मूली की बुवाई की जाती है। इसके लिए 30 सेमी. की दूरी पर हल्की सी मेड़ बनायें तथा उन पर 10–15 सेमी. की दूरी पर बीज बोयें।

भिण्डी, लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। बीज वाली फसलों में अवांछित पौधें निकालें।

ग्वार एवं शकरकन्द : फलियों को थोड़ी कच्ची अवस्था में तोड़कर बाजार भेंजे व शकरकन्द की 60 सेमी. पर रोपाई करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू : तैयार फसल की खुदाई करें तथा खड़ी फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

टमाटर : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

बैंगन : फसल में निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। फल तथा तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : फसल में निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें, तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। कीट–रोग नियंत्रण की पूरी तैयारी रखें।

पालक, धनियाँ, मेथी : पत्तियों की कटाई कर छोटे–छोटे बंडल बनाकर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व पत्तियों पर पानी का छिड़काव करें।

जुलाई : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : नए बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधना प्रारम्भ करें।

केला : अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पेड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें। फल वाले पेड़ों को गिरने से बचाव हेतु सहारा दें। नए बाग की रोपाई हेतु तलवार के शक्ल वाली पुत्तियों का चयन करें।

नीबूवर्गीय फल : बाग लगाने का कार्य प्रारम्भ करें। कैंकर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अमरूद : तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजें। बाग में जल निकास का प्रबन्ध करें। फल विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

लीची : नए पौधे तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह अवश्य समाप्त कर लें।

आंवला : बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें एवं जल निकास की व्यवस्था करें।

आड़ू व आलूबुखारा : भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

जुलाई : पर्वतीय क्षेत्र–फल

सेब : बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुआई करें। अगेती किस्मों के फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

नाशपाती : कज्जली धब्बा व फायर ब्लाइट रोग की रोकथाम हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी : पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। भूरा विगलन रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : रोपित धान में निराई कर संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें। फसल में झौंका, खैरा व जीवाणु झुलसा रोग तथा तना बेधक कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायन का प्रयोग करें।

गन्ना : पहली बँधाई के 50 सेमी. ऊपर दूसरी बँधाई कर लें। इसमें दो पंक्तियों के तीन थानों की बँधाई एक साथ (कैंची बँधाई) की जाती है।

मक्का : फसल में नरमंजरी निकलते समय कुल नत्रजन की मात्रा का एक तिहाई भाग (30–35 कि.ग्रा./हैक्टेयर) की टॉप ड्रेसिंग कर दें।

उर्द एवं मूंग : इन फसलों में 20–25 दिन की अवस्था पर निराई–गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लें। तना मक्खी के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का प्रयोग करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : मंडुवा, झंगोरा एवं काकुन में तना छेदक तथा रामदाना में पर्णजालक कीट (लीफ वेबर) का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार कीटनाशी रसायन का छिड़काव करें।

सोयाबीन : आवश्यकतानुसार निराई कर खरपतवार निकाल लें तथा

फसल में कमला कीट, तना छेदक मक्खी तथा चक्र भृंग (गर्डिल बीटिल) कीट का प्रकोप होने पर संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : फसल में नर मंजरी निकलते समय संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग करें।

धान : सिंचित/असिंचित फसल में तना छेदक कीट एवं झौंका रोग तथा असिंचित धान में कुरमुला कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें। सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व संस्तुति के अनुसार नत्रजन की टॉप ड्रेसिंग एवं असिंचित धान में यूरिया के 02 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, नौरंगी, गहत एवं राजमा : फसल में पर्ण धब्बा रोग लगने पर संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र–सब्जी

टमाटर व बैंगन : टमाटर में फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन, झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 तथा बैंगन में संस्तुत रसायन का छिड़काव करें।

मिर्च : पौधों की वृद्धि अच्छी नहीं है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया खड़ी फसल में डालें। कीटों तथा बीमारियों से फसल का बचाव करें।

फूलगोभी : 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से खड़ी फसल में डालें। मध्यकालीन गोभी की फसल के लिए खेत की आखिरी जुताई पर 100:80:80 के अनुपात में नत्रजन, फॉस्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से डालें व 45x45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।

मूली : पुरानी फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल की बोआई करें।

भिण्डी व लोबिया : तैयार फलियों को तोड़कर बाजार भेजें। फलियों की तुड़ाई 48 घंटे के अन्तराल में करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र–सब्जी

आलू एवं टमाटर : टमाटर में झुलसा बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का छिड़काव करें। तैयार आलू की खुदाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।

बैंगन : फल तथा तना छेदक कीट से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन का घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च/शिमला मिर्च : आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें। बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इन्डोफिल एम–45 का घोल बनाकर छिड़काव करें।

पालक, धनियाँ, मेथी : तैयार पत्तियों की कटाई कर बाजार भेजें। बाजार भेजने से पूर्व छटाई करें व छोटी–छोटी गड्डियाँ बना लें।

फूलगोभी, पातगोभी : तैयार फसल की कटाई कर बाजार भेजें। नयी फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर की दर से डालें।

अदरक, हल्दी : तैयार अदरक की खुदाई कर साफ करें व बाजार भेजने की व्यवस्था करें। यदि फसल की वृद्धि अच्छी नहीं हो रही है तो 50 कि.ग्रा. यूरिया/हैक्टेयर खड़ी फसल में डालें।

अगस्त : मैदानी क्षेत्र–फल

आम : बाग लगाने के लिए पौधों की रोपाई करें। पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने के लिए गुठलियों की बुआई करें। नए पौधे तैयार करने के लिए एक वर्ष पुराने मूलवृंतो पर वीनियर कलम बांधे।

केला : जल निकास की व्यवस्था करें, अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पके घारों की तुड़ाई करके बाजार भेजें।

अमरूद : परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। गूटी बांधने का कार्य इस माह पूर्ण करें।

पपीता : पौधशाला में बीजों की बुआई करें। तने पर बोर्डो लेप करें।

अगस्त : पर्वतीय क्षेत्र–फल

आम एवं नीबूवर्गीय फल: पेड़ों पर ब्लाइटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

सेब एवं नाशपाती : थालों को साफ रखें। फलों को तोड़कर बाजार भेजें। ब्लाइटॉक्स 50 का 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी : फलों को तोड़कर बाजार भेजें।

सितम्बर : मैदानी क्षेत्र–फसल

धान : फसल में बालियाँ बनने की अवस्था पर नत्रजन की संस्तुत मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें। तना बेधक, फुदका कीट एवं पर्ण भित्ती व जीवाणु झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं दूसरी बँधाई कर लें। कंडुवा एवं लाल सड़न रोग से ग्रसित पौधों को निकालकर जला दें। शरदकालीन गन्ने की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें तथा इसके साथ अन्तःफसल के रूप में आलू, लाही (तोरिया), राई, सब्जी मटर, मूली, गोभी, लहसुन, धनियाँ की बुवाई करें।

उर्द एवं मूंग : पिछले माह बोयी गयी फसल में निराई–गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करें। फसल को पीला मौजेक अथवा थ्रिप्स कीट से क्षति होने पर संस्तुत कीटनाषक का प्रयोग करें।

सोयाबीन : जल भराव की स्थिति में जल–निकास की व्यवस्था करें तथा वर्षा न हो तो फली बनते समय हल्की सिंचाई करें।

अरहर : फसल में लपेटक, फली छेदक कीट अथवा बांझ रोग की समस्या आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही) एवं राई/सरसों : तोरियां की बुवाई सितम्बर द्वितीय पखवाड़ें में तथा राई की अगेती बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में कर लें। तिलहनी फसलों में गंधक 25–30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

धान : फसल में बालियाँ बनने की अवस्था पर नत्रजन की संस्तुत मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें। तना बेधक, फुदका कीट एवं पर्ण भित्ती व जीवाणु झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

गन्ना : फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं दूसरी बँधाई कर लें। कंडुवा एवं लाल सड़न रोग से ग्रसित पौधों को निकालकर जला दें। शरदकालीन गन्ने की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें तथा इसके साथ अन्तःफसल के रूप में आलू, लाही (तोरिया), राई, सब्जी मटर, मूली, गोभी, लहसुन, धनियाँ की बुवाई करें।

उर्द एवं मूंग : पिछले माह बोयी गयी फसल में निराई–गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करें। फसल को पीला मौजेक अथवा थ्रिप्स कीट से क्षति होने पर संस्तुत कीटनाषक का प्रयोग करें।

सोयाबीन : जल भराव की स्थिति में जल–निकास की व्यवस्था करें तथा वर्षा न हो तो फली बनते समय हल्की सिंचाई करें।

अरहर : फसल में लपेटक, फली छेदक कीट अथवा बांझ रोग की समस्या आने पर नियंत्रण हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

तोरिया (लाही) एवं राई/सरसों : तोरियां की बुवाई सितम्बर द्वितीय पखवाड़ें में तथा राई की अगेती बुवाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में कर लें। तिलहनी फसलों में गंधक 25–30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें।

सितम्बर : पर्वतीय क्षेत्र–फसल

मंडुवा, झंगोरा, काकुन एवं रामदाना : निम्न एवं मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसलों की कटाई कर लें। देर से पकने वाली प्रजातियों में कीट एवं रोगों के बचाव हेतु संस्तुत रसायनों का छिड़काव करें।

सोयाबीन एवं अरहर : सोयाबीन में कमला कीट, तना छेदक अथवा चक्रभृंग कीट तथा अरहर में पत्ती लपेटक अथवा फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु रसायनों का छिड़काव करें।

मक्का : घाटी, कम व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैयार फसल की कटाई कर लें तथा ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनने की अवस्था पर हल्की सिंचाई करें व रोग तथा कीट नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

धान : घाटियों व कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में चेतकी/जेठी/रोपित धान की फसल तैयार होने पर कटाई कर लें। मध्यम व ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दाने बनते समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा फसल में रोग अथवा कीटों के नियंत्रण हेतु संस्तुति के अनुसार रसायनों का छिड़काव करें।

उर्द, मूंग, गहत, नौरंगी एवं राजमा : उर्द, मूंग एवं गहत की तैयार फसल की कटाई कर लें। नौरंगी एवं राजमा की फसल में कीट अथवा रोग आने पर संस्तुति के अनुसार रसायन का छिड़काव करें।

तोरिया एवं पीली सरसों : घाटियों एवं कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में रोपित धान तथा निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मंडुवा, झंगोरा, काकुन, उर्द व मूंग की कटाई के पश्चात् माह के अंत तक इन फसलों की बुवाई करें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शनों के अन्तर्गत 17.10 हे. क्षेत्रफल पर 205 प्रदर्शन संचालित किये गये हैं। इनके अनुश्रवण हेतु समय–समय पर केन्द्र के वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी प्रदान करते रहते है।
- केन्द्र द्वारा सात प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर 153 प्रशिक्षणर्थियों को लाभान्वित किया गया। इसी क्रम में वैज्ञानिकों द्वारा 72 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण/गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 745 कृषकों को केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही कृषक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की गयी।

निदेशक प्रशासन एवं अनुश्रवण, पंतनगर का केन्द्र पर भ्रमण

- श्री बी.एस. चलाल, निदेशक प्रशासन एव अनुश्रवण, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर दिनांक 31.05.2025 को केन्द्र का भ्रमण कर केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे कार्यक्रमों का अनुश्रवण एवं अवलोकन किया और कहा कि विकसित तकनीक दूरस्थ क्षेत्र तक पहुंचाने में केन्द्र द्वारा भरपूर प्रयास किया जाना चाहिए।
- प्राकृतिक खेती विषय पर पॉच दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 23.05. 2025 से 27.05.2025 तक केन्द्र पर आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती का परिचय, महत्व, कार्यविधियों इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम मई 29–जून 12, 2025 में कृषि विज्ञान केन्द्र तथा विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा के वैज्ञानिकों द्वारा वृहद स्तर पर प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषकों को कृषि सम्बन्धी तकनीकी जानकारी, कृषिगत समस्याओं का समाधान, कृषि चौपाल इत्यादि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में कृषकों को जानकारी उपलब्ध कराते हुए इनसे भरपूर लाभ लेने हेतु अपील किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली)

- केन्द्र द्वारा कृषकों हेतु कुल 27 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 544 कृषको एवं ग्रामीण युवाओं हेतु 01 प्रशिक्षण का आयोजन कर 15 ग्रामीण युवाओं को नवीनतम तकनीकों की जानकारी देते हुए प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षणो का आयोजन चारा घास, मषरूम उत्पादन, जैविक उर्वरकों का प्रयोग, रसायन का सुरक्षित प्रयोग, सोयाबीन का मूल्य संर्वधन, फसल उत्पादन, प्राकृतिक खेती, सब्जी उत्पादन, फसल सुरक्षा, मृदा नमूना लेने की विधि, पशुपालन इत्यादि विषयों पर किया गया।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान दिनांक 29.05.2025 से 12.06.2025 में भाग लेकर वैज्ञानिकों द्वारा कृषि उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकें, मृदा स्वास्थ्य, मृदा परीक्षण, प्राकृतिक खेती, मुर्गी पालन, सब्जी एवं फसलों में कीट एवं रोग प्रबन्धन, स्थानीय फलों के मूल्य संवर्धन, केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा कृषकोपयोगी विभिन्न योजनाओं इत्यादि की जानकारी उपलब्ध करायी गयी।

प्राकृतिक खेती– प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से सोयाबीन जे.एस.–2098, धान पूसा बासमती–1847 व पूसा बासमती–1509 के 6.0 हे. तथा पोषण उद्यान पर 1.0 हे. में प्रदर्शन संचालित किये गये हैं। ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत टमाटर की नवीन 2000+ का प्रजातीय परीक्षण व गन्ने में शाकनाशी रसायन के प्रयोग पर परीक्षण लगाये गये।

उन्नत सेब प्रबन्धन पर परिचर्या

- केन्द्र द्वारा एक कृषक वैज्ञानिक संवाद, एक प्रक्षेत्र दिवस तथा 19 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर कुल 110 कृषकों की समस्याओं का समाधान किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 49 व्याख्यान तथा कृषि से सम्बन्धित 06 प्रसार साहित्यों का भी वितरण किया गया।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम मई 29–जून 12, 2025 में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वृहद स्तर पर प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषकों को कृषि सम्बन्धी तकनीकी जानकारी, कृषिगत समस्याओं का समाधान, कृषि चौपाल इत्यादि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष रूप से केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही किसान कल्याणकारी योजनाओं के बारे में कृषकों को जानकारी उपलब्ध कराते हुए इनसे भरपूर लाभ लेने हेतु अपील किया गया। केन्द्र द्वारा शिमलामिर्च, करेला, टमाटर पत्तागोभी सब्जियों की उच्च गुणवत्तायुक्त पौध कृषकों को उपलब्ध करायी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत, संकर बासमती धान के 10, संकर धान के 10, मक्का के 05, स्ट्राबेरी के 02 तथा आलू के 01 प्रदर्शन आयोजित किये गये। ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत गन्ने में 03, सब्जी पर 01, गो वंश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु उन्नत प्रजाति के मल्टीकट ज्वार पर 10 परीक्षण आयोजित किये गये।
- केन्द्र द्वारा कुल 09 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 211 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- कृषि विज्ञान केन्द्र, देहरादून को कृषि विस्तार में उत्कृष्टता के लिए NAAS धानुका पुरस्कार–2025, सर्वश्रेष्ठ केवीके जोनल अवार्ड (अटारी–जोन 1, लुधियाना) से सम्मानित किया गया। यह उल्लेखनीय उपलब्धि टीम केवीके के अटूट समर्पण, नवाचार और

परिश्रम का सच्चा प्रतिबिंब है।

- विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025 का शुभारम्भ उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा देहरादून के सहसपुर ब्लॉक के गुनियाल गांव में किया गया। इस कार्यक्रम में श्री गणेश जोशी जी, मा. कृषि मंत्री, कृषि सचिव, अपर कृषि सचिव, उत्तराखंड तथा पंतनगर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान जी तथा वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली उत्तराखण्ड औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार (पौड़ी) के कुलपति डा0 परविंदर कौशल जी द्वारा गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराई गई।

विकसित कृषि संकल्प अभियान से तकनीक हस्तांतरण

- विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत दिनांक 06.06.2025 को श्री शिव राज सिंह चौहान, मा. कृषि और किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा सोडा गांव, रायपुर ब्लॉक में आयोजित किसान चौपाल में कृषकों से वार्ता की गयी। कार्यक्रम में सचिव, कृषि उत्तराखंड, डॉ सुरेंद्र नारायण पांडे जी, मा. कुलपति, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, डॉ मनमोहन सिंह चौहान, निदेशक कृषि सहित अनेक राज्य स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे। इसी क्रम में हिमालयन कल्चरल सेंटर, देहरादून में मा. मंत्री जी ने किसानों को संबोधित किया। अभियान के समापन के पश्चात् मा. मंत्री जी द्वारा NAAS complex, नई दिल्ली में बैठक आयोजित की गयी थी। बैठक में कृषि विज्ञान केंद्र देहरादून से संबंधित तीन किसानों व प्रभारी अधिकारी ने प्रतिभाग किया।
- विश्व मधुमक्खी दिवस, 20 मई 2025 के अवसर पर राजभवन, देहरादून में किसानों में मधुमक्खी पालन के प्रति जागरूकता हेतु कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला में मा. राज्यपाल ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया और मधुमक्खी पालकों द्वारा प्रदर्शित शहद उत्पादों के स्टॉल और कृषि विज्ञान केंद्र देहरादून के स्टॉल का भी भ्रमण किया गया। कार्यक्रम में गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर के मा. कुलपति, निदेशक प्रसार शिक्षा और राज्य सरकार के अन्य गणमान्य अतिथि भी शामिल हुए।
- ट्रायबल सब प्लान परियोजना के अंतर्गत कुक्कुट पालन प्रशिक्षण दिनांक 20–21 जून 2025 कालसी ब्लॉक के सुलगा ग्राम में आयोजित किया। यह कार्यक्रम डा. सुनील कुमार, सह प्राध्यापक, पशु आनुवंशिक एवं प्रजनन विभाग पंतनगर विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित की गई।
- श्री भागीरथ चौधरी जी, राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण द्वारा विकास भवन देहरादून में किसानों के साथ वार्ता की गयी। आपने कार्यक्रम में किसानों की समस्याओं को सुना तथा यथाशीघ्र उनके समाधान का आश्वासन दिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा पशुओं में पुनः प्रजनन की समस्या तथा गेहूं में विभिन्न खरपतवारनाशियों की दक्षता वृद्धि हेतु आन फार्म ट्रायल आयोजित किए गए। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत शंकर गायों में अंतः एवं बाहरी परजीवियों के नियंत्रण, बकरियों के आवास में संक्रमण, आय वृद्धि के लिये मुर्गियों की उन्नत नस्ल का पालन, धान की नवीनतम विकसित प्रजाति का प्रचार–प्रसार, ट्रेंच ओपनर का गन्ने में उपयोग आदि विषय पर प्रदर्शन लगाए गए। ड्रोन परियोजना के अर्न्तगत केन्द्र द्वारा 22 किसानो के प्रक्षेत्र पर 45.0 हे0 क्षेत्रफल में नैनो यूरिया, सागरिका एवं मोनोक्रोटोफास का छिड़काव करवाया गया।
- क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत चार प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिसमें 198 किसानों ने भाग लिया।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान दिनांक 29.05.2025 से 12.06.2025 कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि सम्बन्धी तकनीकी जानकारी, केन्द्र व राज्य सरकार की कृषि आधारित प्रमुख योजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी।
- केन्द्र द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस, योग दिवस एवं विश्व मधुमक्खी दिवस का आयोजन मा. राज्यपाल महोदय की अध्यक्षता में राजभवन, देहरादून में किया गया।

विश्व मधुमक्खी दिवस कार्यक्रम– राजभवन, देहरादून

इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा किसान चौपाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर पांच रेडियो टॉक प्रसारित करने हेतु रिकॉर्ड कराए गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत धान (पूसा बासमती–1847) का 30 कृषकों के 5.40 हैक्टेयर, मंडुवा (वी0एल0–379) एवं झंगोरा (पी0आर0जे0–01) का 20 कृषकों के 0.40 हैक्टेयर प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन लगाया गया। पोषण वाटिका प्रथम पंक्ति के अन्तर्गत 50 महिला कृषकों को सब्जी बीज एवं पौध का वितरण किया गया। प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत धान में विभिन्न फफूंदीनाशक एवं गन्ना में खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवारनाशियों के प्रयोग पर परीक्षण लगाये गये।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृषक एवं महिला कृषकों के लिये कुल 11 प्रशिक्षणों द्वारा 167 कृषकों को सम सामयिक सस्य क्रियाएं, पशुपालन, मछली पालन एवं गृह विज्ञान सम्बन्धी जानकारी दी गयी।
- आर्या परियोजना के अन्तर्गत प्रगतिशील कृषक श्री मंजीत राणा एवं श्री सुमित जोशी ने कुक्कुट पालन प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने प्रक्षेत्र में बैक्यार्ड पौल्ट्री इकाई स्थापित की, जिससे उन्हें प्रति वर्ष औसतन रू. तीन लाख की आय होती है। स्वयं सहायता समूह की सदस्या श्रीमती गीता नेगी एवं प्रियंका कोटियाल ने शोभाकारी मोमबत्ती का प्रशिक्षण प्राप्त कर मोमबत्ती बनाने की इकाई स्थापित कर आजीविका संर्वधन कर रही हैं।

पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम

- अन्य विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत– पोषण पखवाड़ा (08 से 22 अप्रैल 2025) का शुभारम्भ केन्द्र में किया गया। तत्पश्चात् जनपद के विभिन्न ग्रामों व आंगनवाड़ी केन्द्रों पर गर्भवती एवं धात्री महिलाओं को गर्भावस्था एवं नवजात शिशु के देखभाल के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान (29 मई से 12 जून 2025) कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को कृषि आधारित जानकारी

प्रदान की गयी।

- केन्द्र द्वारा कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम एवं महिला स्वयं सहायता समूह की मासिक बैठको के अन्तर्गत सदस्याओं को आयोपार्जन के विभिन्न आयामों की जानकारी दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा क्षेत्र की पारम्परिक फसलों, पर्वतीय क्षेत्रों में फलों की बागवानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जियों की पैदावार उपयुक्त तकनीकों पर सामुदायिक रेडियो जनवाणी पन्तनगर में वार्ता दी गयी। दिनांक 20 मई 2025 को राजकीय मौनपालन केन्द्र, ज्योलीकोट के समन्वयन से केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को मौनपालन सम्बन्धी जानकारी दी गयी। केन्द्र की गतिविधियों की सूचना 26 प्रेस विज्ञप्तियों के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी।
- राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना अन्तर्गत कृषक सखियों के 5 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (17 जून से 21 जून 2025) आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 28 कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त, विधियाँ एवं विभिन्न प्राकृतिक कीटनाशक एवं खरपतवारनाशी बनाये जाने के बारे में विस्तृत विधि प्रदर्शन एवं व्याख्यान द्वारा जानकारी दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत धान–3.20 है0, सोयाबीन–3.0 है0, गहत–2.0 है0, मंडुआ–10.0 है0, प्याज–1.0 है0, भिण्डी–0.5 है0, कीवी–0.5 है0, आम–0.5 है0 व मक्का–1.0 है0 में प्रदर्शन संचालित हुए हैं।
- केन्द्र द्वारा कुल 06 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 146 कृषकों को लाभान्वित किया गया। इन प्रशिक्षणों द्वारा मौन पालन, कीट प्रबन्धन, मृदा परीक्षण एवं पशुपालन सम्बन्धी जानकारी दी गयी।
- विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर विभिन्न कीट व रोगों की रोकथाम, मशरूम उत्पादन, पशुपालन व मधुमक्खी पालन, प्राकृतिक खेती, सब्जी उत्पादन, कृषि मौसम विज्ञान, पौधों में लगने वाले कीट एवं बीमारियों के प्रबन्धन इत्यादि विषयों पर परामर्श किये गये। इसी प्रकार, अनेक कृषक कृषि व उद्यान सम्बन्धी समस्यों के समाधान हेतु केन्द्र पर भ्रमण किये। इस अवधि में कृषि से सम्बन्धित 07 कृषि लेख, 04 रेडियो वार्ता तथा 41 कृषि आधारित तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान–कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम

- केन्द्र के प्रक्षेत्र से कृषकों को उन्नत प्रजाति के पौध जैसे टमाटर, खीरा, कद्दू, लौकी, करेला, तोरई, शिमला मिर्च, बैंगन, हरी मिर्च, ब्रोकली व फूलों में गोल्डन येलो पोपी, गुलाब, गेंदा, पिटुनिया व औषधीय पौधों में रोंजमेरी व कैमोमाइल और फल में माल्टा व स्ट्रॉबेरी इत्यादि का विक्रय किया गया।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान (दिनांक 29 मई से 12 जून, 2025) कार्यक्रम में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि सम्बन्धित नवीनतम तकनीकी जानकारी देते हुए विशेष रूप से कीट व रोगों की रोकथाम, मशरूम उत्पादन, पशुपालन व मधुमक्खी पालन, प्राकृतिक खेती, सब्जी उत्पादन, कृषि मौसम विज्ञान इत्यादि विषयों पर जानकारी प्रदान की गयी।
- श्री बी0एस0 चलाल, निदेशक प्रशासन एवं अनुश्रवण, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा दिनांक 24.06. 2025 को कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण कर संग्रहालय, मशरूम इकाई, कीवी पौधशाला, स्वचालित मौसम इकाई, पॉलीहाउस, नेटहाउस इत्यादि इकाईयों का अवलोकन किया गया। आपने सीमान्त गॉवों के किसानों को अधिक से अधिक संख्या में केन्द्र से जोडने का सुझाव दिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- केन्द्र द्वारा संरक्षित खेती में टमाटर की हिमशिखर, इण्डम 1313, शिमला मिर्च की इंदरा, खीरा की शीतल, ब्लैसी, बैला तथा क्राप कैफेटेरिया में बैंगन की नवकिरण, जयंत, ब्रिजेश, पी.पी.एल.–74, मूली की स्पार्कल व्हाइट, मिर्च की गोपी–520, छप्पन कद्दू की चैंपियन, जुकनी प्रजातियों, फ्रैंचबीन की फाल्गुनी तथा भिण्डी की अनामिका तथा चौलाई की इंडम लाल, सुपर फूड, अमरेंथ ग्रीन प्रजातियों को मूल्यांकन एवं प्रदर्शन हेतु लगाया है।

पॉली मल्च तकनीक से टमाटर उत्पादन

- वैज्ञानिकों द्वारा चौलाई के डॉनट तथा केक, गलगल, नींबू व मशरूम के मूल्य संवर्धन कर अचार तथा माल्टा, गलगल एवं बुरांश का स्क्वैश भी बनाया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। केन्द्र के शैक्षणिक मशरूम उत्पादन इकाई में ढिंगरी मशरूम का उत्पादन किया जा रहा है।
- केन्द्र की 20वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांकः 28. 05.2025 को ऑनलाईन मोड में संपन्न हुई। बैठक में डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा, गो0ब0 पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर (अध्यक्ष), डा0 प्रीति मंमगाई, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा0कृ0अ0प0–अटारी, लुधियाना, डा0 सुनीता टी0 पाण्डे, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान, डा0 संजय चौधरी, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, डा0 वी0पी0 सिंह, प्राध्यापक, उद्यान विज्ञान, पन्तनगर विश्वविद्यालय, श्री त्रिलोक सिंह, प्राधानाचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, रूद्रप्रयाग, श्री एस0एल0 सजवाण, सहायक विकास अधिकारी (कृषि), श्री अरविन्द कुमार, उद्यान निरीक्षक सहित जनपद के अनेक प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। बैठक के आरंभ में डा0 संजय सचान, प्रभारी अधिकारी द्वारा सभी समस्त अतिथियों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् प्रभारी अधिकारी द्वारा गत वर्ष की प्रगति आख्या (जनवरी, 2024 से फरवरी, 2025 तक) एवं कार्ययोजना वर्ष 2025–26 का प्रस्तुतीकरण कर कार्ययोजना पर सुझाव आमंत्रित किये गये। डा0 जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक प्रसार शिक्षा ने कहा कि प्रदर्शन एवं परीक्षण के अन्तर्गत जनपद की महत्वपूर्ण फसलों का ही चयन, गहत व अन्य दलहनी एवं तिलहनी फसलों के क्षेत्रफल में विस्तार तथा जनपद के आवश्यकतानुरूप कार्ययोजना बनाया जाय। डा0 सुनीता टी0 पाण्डे, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान द्वारा सुझाव दिया गया कि जनपद में जैविक खेती तथा प्राकृतिक खेती से सम्बन्धित परम्परागत कृषि ज्ञान का डॉक्यूमेंटेशन किया जाए।

- विकसित कृषि संकल्प अभियान में वैज्ञानिक प्रतिभाग कर किसानों को खरीफ फसलों की उन्नत तकनीकी जानकारी, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, मशरूम उत्पादन, मौनपालन एवं मूल्य संवर्धन जैसे विषयों के बारे में जानकारी दिये। पोषण पखवाड़ा (अप्रैल 09–21, 2025) का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं को पोषण से सम्बन्धित जानकारियाँ प्रदान की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

नर्सरी वर्कर स्किल डेवलपमेंट प्रशिक्षण

- ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत जलीय कृषि प्रोबायोटिक पूरक का मूल्यांकन, मछली के फीड प्रोबायोटिक विकास और अस्तित्व का प्रभाव, पशु विज्ञान इत्यादि के 04 है. क्षेत्रफल में परीक्षण आयोजित किये गये।
- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत मसूर, गेहूँ, सरसों, प्याज, भिण्डी तथा मत्स्य एवं बकरी पालन सम्बन्धी प्रदर्शन आयोजित किये गये।
- कृषक/कृषक महिलाओं हेतु कुल 17 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर 160 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया। इसी क्रम में नर्सरी वर्कर स्किल डेवलपमेन्ट प्रशिक्षण का आयोजन कर 21 प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित किया गया।
- प्रक्षेत्र की गतिविधियों के अन्तर्गत गेंहू की कटाई, धान की पौधशाला तथा वर्मी कम्पोस्टिंग कार्यक्रम चलाया गया। इस अवधि में कृषकों को उन्नत प्रजाति के सब्जी पौध उपलब्ध कराया गया।
- विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा भाग लेकर कृषकों को विभिन्न विकसित कृषि तकनीक, सरकार की योजनाओं इत्यादि के बारे में जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम में पंतनगर से वैज्ञानिकों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया।
- अन्य कार्यक्रम के अन्तर्गत पोषण पखवाड़ा, कृषि चौपाल, वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान, फिल्म एवं टी0वी0 टॉक इत्यादि कार्यक्रम सम्पादित किये गये। इस अवधि में वैज्ञानिकों द्वारा 48 भ्रमण कार्यक्रम आयोजित कर 478 कृषकों को लाभान्वित किया गया।

प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियाँ

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

प्राकृतिक खेती शोध केन्द्र पर कुनाब जल बनाने की विधि का प्रदर्शन देखते प्रशिक्षणार्थी

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा इस अवधि में कुल तीन प्रशिक्षण आयोजित किये गये। प्रशिक्षण के मुख्य विषय उन्नत खरीफ फसलोत्पादन तकनीक, आय वृद्धि हेतु कुक्कुट पालन तथा जैविक खेती एवं जैविक फसल एवं सब्जी उत्पादन तकनीक सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित कराये गये। इन कार्यक्रमों में कुक्कुट फार्म स्कूलों के संचालक, पशुधन प्रसार अधिकारी, बी0टी0एम0, कुक्कुट पालक, कृषि विभाग के अधिकारी, प्रसार कार्यकर्ता, विभागीय अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 75 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा जुलाई–सितम्बर, 2025 में आयोजित होने वाले प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	उन्नत बकरी पालन	अगस्त 05–07, 2025
2.	बाजार आधारित प्रसार	अगस्त 28–30, 2025
3.	रबी फसलोत्पादन उन्नत तकनीक	सितम्बर 23–25, 2025

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक)

भ्रमण पर आये 180 कृषकों/आगन्तुकों को एकल खिड़की वितरण प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों की जानकारी एवं फसलों व सब्जियों के बीज, साहित्य उपलब्ध कराये गये। कृषकों एवं अन्य हितधारकों को रू. 1,32,735.00 मूल्य के विभिन्न विषयों के 512 कृषि साहित्य/पुस्तक एवं रू. 28,319.00 मूल्य के धान, लोबिया, धनिया, भिण्डी, बैंगन, पालक, मेथी, लौकी, टमाटर, मूली एवं तोरई आदि के बीज केन्द्र के विक्रय पटल से उपलब्ध कराये गये। इस अवधि में कृषक हैल्पलाईन/कॉल सेन्टर 05944–234810 के माध्यम से किसानों एवं अन्य हितधारकों द्वारा पूछे गये 102 समस्याओं/जिज्ञासाओं का समाधान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

कृषक प्रदर्शन इकाई

कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (समेटी) के परिसर में रसायन मुक्त खेती, कृषकों के क्षमता विकास एवं कृषि शिक्षा सम्बन्धी ज्ञानवर्धन हेतु

समन्वित कृषि प्रणाली इकाई स्थापित की गयी है। यह यूनिट कृषकों को प्रति इकाई कम कृषि लागत से अधिक आय अर्जन हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में इस प्रदर्शन प्रक्षेत्र पर भिण्डी, लौकी, कद्दू, तोरई, करेला, फ्रासबीन, पपीता इत्यादि के प्रदर्शन आयोजित किये जा रहे हैं।

सफलता की कहानी :

मशरूम उत्पादन से धन उत्पादन

श्रीमती ममता मेहता, उम्र 36 वर्ष कपकोट की निवासी हैं। कल–कल बहती सरयू नदी के किनारे स्थित

यह जिला अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के लिए विख्यात है। ममता मेहता का असली संघर्ष पति के असमय निधन के बाद शुरू हुआ। यद्यपि उन्होंने हार न मानते हुए चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना किया। वर्ष 2017 में उन्होंने कृषि के क्षेत्र में भाग्य आजमाने की ठानी, जिसकी शुरूआत उन्होंने कृषि विभाग से सम्पर्क कर की। इनकी दक्षता एवं लगन को देखते हुए विभाग ने उनके खेतों पर प्रदर्शन एवं अन्य प्रसार गतिविधियाँ शुरू की। तकनीकी जानकारी के अभाव में आपको प्रारम्भ में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आपने महसूस किया कि मशरूम उत्पादन आपके लिये सर्वोत्तम उद्यम होगा। अतः विभाग ने आपको समेटी पंतनगर में होने वाले ''मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण'' के लिए नामांकित किया। यह प्रशिक्षण आपके लिए ''आँख खोलने'' जैसा साबित हुआ। प्रशिक्षण के पश्चात्, आपने विभागीय मदद से वर्ष 2019 में एक छोटे से कमरे में तीन बैग से मशरूम उत्पादन की शुरूआत की और वैज्ञानिक विधाओं का समावेश करते हुए मशरूम उत्पादन में कई गुना वृद्धि की। वर्ष दर वर्ष आपने अपने उद्यमिता कौशल को बढ़ाया और जनपद स्तरीय ''मशरूम मास्टर ट्रेनर'' के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसके पश्चात् आप समेटी पंतनगर द्वारा आयोजित अन्य प्रशिक्षणों में भी आवश्यकतानुसार भाग लिया। पंतनगर में प्रशिक्षणों के दौरान होने वाले व्याख्यानों एवं प्रायोगिक कक्षाओं का भरपूर लाभ लिया। आपको आतमा से ''किसान श्री'' एवं ''किसान भूषण'' सम्मान से सम्मानित किया गया। सामाजिक कार्यों में आपके योगदान के लिए नैनीताल जिले में आपको ''दानपुर रत्न'' सम्मान से भी सम्मानित किया गया। पंतनगर में आयोजित राष्ट्रीय कृषि उद्यमिता विकास मेला में आपको ''अग्रणी महिला उद्यमी सम्मान'' से नवाजा गया। वर्तमान में आपकी मशरूम, उद्यान, डेयरी इत्यादि से वार्षिक आय लगभग रू. 4.50 लाख है जबकि वर्ष 2019 में तीन बैग मशरूम द्वारा यह मात्र रू. 6000.00 थी। आय बढ़ने के परिणाम स्वरूप आपने उन्नत कृषि निवेश, मशरूम क्षेत्रफल में विस्तार और बच्चों के सर्वोत्तम शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहीं हैं।

निदेशक की कलम से

किसानों के आजीविका सुधार एवं आय बढ़ोत्तरी ही कृषि एवं कृषि से जुड़े अधिकारियों एवं कृषि वैज्ञानिकों की सार्थकता सिद्ध करेगी। कृषि वैज्ञानिकों के साथ–साथ कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु राज्य सरकार भी तत्पर है एवं सरकार द्वारा अनेक कृषक कल्याणकारी योजनाएं एवं अनुदान भी उपलब्ध कराया जा रहा है। मैं समस्त कृषकों से अपील करूंगा कि कृपया वे इन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करें। यद्यपि उत्तराखण्ड में पर्वतीय कृषि की अपनी जटिलतायें हैं और इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनेक किसान कृषि के लाभकारी उद्यमों को अपनाकर आर्थिकी मजबूत कर रहे हैं। ये कृषक क्षेत्र के अन्य कृषकों हेतु आदर्श व प्रेरणाश्रोत के रूप में भी उभर रहे हैं। इसके विपरीत बहुत से ऐसे भी कृषक हैं जो परम्परागत खेती करते आ रहे हैं, परिणाम स्वरूप उनके आर्थिकी में आशा के अनुरूप बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है। वैज्ञानिकों की वास्तविक परीक्षा इनके विकास की है। कृषि विज्ञान केन्द्र व पंतनगर मुख्यालय के वैज्ञानिक ऐसे काश्तकारों के लिए जनपद के आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ऑन फार्म ट्रायल, कृषक–वैज्ञानिक संवाद जैसे कार्यक्रम संचालित कर कृषकों को लाभान्वित कर रहे हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में वैज्ञानिकों का कृषक समुदाय के विकास हेतु कार्य करने पर उन्हें बधाई देता हूँ। पत्रिका को मूर्त रूप देने वाले डा. बी.डी. सिंह प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) की सराहना व धन्यवाद देना भी अपना कर्तव्य मानता हूँ।

(डा० जितेन्द्र क्वात्रा)
निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी–उत्तराखण्ड

आभार

विभिन्न शोध संस्थानों द्वारा अनवरत रूप से उन्नत तकनीक विकसित किये जाते रहते हैं, परन्तु प्रायः इनका समुचित प्रचार–प्रसार न होने के कारण कृषक इनसे वंचित रह जाते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक शोध एवं प्रसार कार्यक्रम के बीच सेतु का कार्य करते हुए तकनीक हस्तान्तरण में महत्ती योगदान देते हैं। वर्तमान में कृषक डिजिटल कृषि तकनीक जैसे टोल फ्री हेल्प लाईन, इन्टरनेट, बल्क एस.एम. एस., वाट्सऐप, वीडियो कान्फ्रेंसिंग आदि का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे समस्या का प्रभावी समाधान मिलता है। पर्वतीय क्षेत्र में महिलायें जिनकी ''कृषि के रीढ़ की हड्डी'' के रूप में पहचान है, समूह के माध्यम से डेयरी, कुक्कुट पालन, मशरूम, मसाले, मंडुवा, हल्दी, रामदाना आदि के मूल्यवर्धन से अपने आय संवर्धन के साथ–साथ अनेक अन्य को भी प्रगति की राह दिखा रही है। अनेक कृषक इस संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर न सिर्फ अपनी आजीविका संवर्धन बल्कि दूसरे ग्रामीण युवाओं को भी स्वरोजगार अपनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। इस पत्रिका को तैयार करने में निदेशक प्रसार शिक्षा से मिलने वाले निरन्तर प्रोत्साहन हेतु मैं उनका आभारी हूँ। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों, वैज्ञानिक तथा मुख्यालय के सभी वैज्ञानिक/कार्मिक का आभारी हूँ, जिन्होंने पत्रिका को तैयार करने में अमूल्य सहयोग दिया है। पत्रिका को और बेहतर बनाने में आपके सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होंगे। आप अपने सुझाव पत्रिका के अंतिम पेज पर अंकित फोन नम्बर अथवा मेल आई.डी. पर प्रेषित कर सकते हैं।

धन्यवाद।

(डा० बी.डी. सिंह)
प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड
दूरभाष : 05944-233336, 233811, ई-मेल : dirextedugbp@gmail.com
हेल्प लाइन : 05944-234810
संरक्षक : डॉ० मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति; मुख्य सम्पादक : डॉ० जितेन्द्र क्वात्रा, निदेशक, प्रसार शिक्षा एवं समेटी
सम्पादक : डॉ० बी.डी. सिंह, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)

''किसान हैं अन्नदाता, यहीं हैं देश के भाग्यविधाता''